<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

<u>4 फरवरी 2013</u>

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला-2013

<u>उद्घाटन</u> समारोह

''जब मैं लोगों को पढ़ते हुए देखता हूँ तो मुझे सबसे अधिक खुशी होती है,'' ये शब्द माननीय राज्य मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, डॉ. शशि थरूर ने नई दिल्ली स्थित प्रगति मैदान में नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2013 का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए ।

विख्यात लेखक एवं उत्सुक पाठक डॉ. थरूर ने बचपन में अपनी पढ़ने की आदत के बारे में बताते हुए कहा, ''मेरा एक भी दिन पुस्तकों के बिना व्यतीत नहीं हुआ । मुझे अलग-अलग तरह की पुस्तकें पढ़ने का बहुत शौक था जिसमें तेनालीराम, चंपक आदि पुस्तकें शामिल थीं । पुस्तकों ने मुझे भारत के विभिन्न पहलुओं को जानने का एक अनूठा अनुभव प्रदान किया ।'' डॉ. शशि थरूर ने मेले में विशिष्ट अतिथि देश फ्रांस का स्वागत करते हुए उन्होंने कहा कि फ्रांस के लोग पुस्तकों एवं पठन को एक उत्सव मानते हैं, हमें भी उनसे यह सीखना चाहिए । इसके साथ ही उन्होंने औपचारिक रूप से मेले की शुरुआत की घोषणा की । उपस्थित लोगों ने करतल ध्वनि से इस घोषणा का स्वागत किया ।

इस अवसर पर सम्मानित अतिथि प्रख्यात लेखक, सांसद (राज्य सभा) तथा अध्यक्ष, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, डॉ. कर्ण सिंह ने पुस्तकों के प्रति अपने प्रेम को अभिव्यक्त करते हुए कहा कि ऐसा कोई भी व्यक्ति जो पुस्तकों से प्रेम करता है उसके लिए पुस्तकों से बड़ी कोई खुशी नहीं है । उन्होंने पुस्तकों को सरस्वती का वरदान कहा और अपनी बात का अंत सरस्वती की वंदना में श्लोक पढ़ कर किया ।

उद्घाटन समारोह का आयोजन बाल एवं युवा पैवेलियन में किया गया । इस विशिष्ट पैवेलियन को देखते हुए डॉ. शशि थरूर ने कहा कि बारिश के मौसम ने हमें इस बाल एवं युवा पैवेलियन को देखने का अवसर प्रदान किया है, लगता है कि यह मौसम भी इस वर्ष पुस्तक मेले में होने वाले विशिष्ट बदलावों का स्वागत कर रहा है ।

इस मेले की थीम 'देशज अभिव्यक्तियाँ : भारतीय परिकल्पना में लोक एवं जनजातीय साहित्य' बहुत आकर्षक है । यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसके बारे में हम बहुत अधिक नहीं जानते अतः मुझे लगता है कि हमें जनजातीय साहित्य की ओर पूरा ध्यान देना चाहिए । एनबीटी ने यह पहल करके सराहनीय काम किया है । इसके साथ ही उन्होंने लेखक मंच तथा ई-पुस्तकों का भी उल्लेख किया ।

भारत में फ्रांस के राजदूत श्री फ्रैंकॉएस रिचियर ने इस अवसर पर कहा, ''फ्रांस ने मुद्रण, लेखन तथा इंटरनेट का आविष्कार तो नहीं किया, परंतु हम इतिहास, विज्ञान आदि पुस्तकों का प्रकाशन कर रहे हैं । हमारे पास अनेक भाषाएँ हैं जो हमारे देश की अनेकता एवं विविधता को प्रतिबिंबित करती हैं । हम यहाँ विशिष्ट अतिथि देश के रूप में आकर अत्यंत प्रसन्न हैं । यह हमारे लिए एक अद्‌भुत अनुभव होगा ।'' उन्होंने कहा, ''फ्रेंच पैवेलियन 2100 पुस्तकों का प्रदर्शन करेगा तथा यहाँ आने वालों को उन दुर्लभ पुस्तकों को देखने का भी अवसर प्रदान करेगा जिनकी पांडुलिपियाँ आसानी से उपलब्ध नहीं होतीं ।'' श्री रिचियर ने यह जानकारी भी दी कि इस पुस्तक प्रदर्शनी में तीन प्रख्यात फ्रांसीसी लेखक आम जनता के साथ संवाद स्थापित करेंगे । फ्रांस तथा भारत के बीच सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ाने का एक उचित अवसर होगा क्योंकि हम दोनों देशों में लोकतांत्रिक मूल्य जैसा समान तत्व विद्यमान है ।

इससे पहले एनबीटी के अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन ने उपस्थित प्रतिभागियों, गणमान्य अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि एनबीटी, नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला को एक स्मरणीय उत्सव बनाने के लिए हर संभव प्रयास करेगा । उन्होंने इस बार मेले में एनबीटी द्वारा की गई नई पहल जैसे 'राइट्स टेबल', 'लेखक मंच', 'पुस्तक कला प्रदर्शनी' से भी लोगों को अवगत कराया ।

इस अवसर पर भारतीय प्रकाशक संघ के अध्यक्ष श्री सुधीर मल्होत्रा तथा भारतीय व्यापार संवर्धन संगठन की अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक सुश्री रीता मेनन भी उपस्थित थीं ।

इस आयोजन में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित कुछ बाल पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया- 'मेरी पहली हवाई यात्रा' (पंकज चतुर्वेदी, चित्र : इरशाद कप्तान); बूंद (रामेन्द्र कुमार, चित्र : अजंता गुहिठाकुर); हेल्पिंग हैंड (समरेश चटर्जी) और भक्त साल्वे (रवीन्द्र साहू) । कार्यक्रम की शुरुआत और अंत में किराना घराने के परवेज़ अहमद एंड पार्टी ने अपने सुमधुर गीतों से समां बांध दिया, जिसमें केंद्रीय विद्यालय सेक्टर-5, द्वारका के छात्रों ने भी साथ दिया । साथ ही मेले में हॉल नंबर 18 में 'कनोडिया' नामक किताब का लोकार्पण भी किया गया ।

पांडवानी गायिका, तीजन बाई मेले का मुख्य आकर्षण रहीं ।

आज मेले में आने वाले विशिष्ट व्यक्तियों में श्री टी.एन. चतुर्वेदी, सांसद; डॉ. ब्रजेन्द्र सिंह हमदर्द, सांसद; श्री विनय कुमार पॉल, निदेशक, अंबेडकर फाउंडेशन; श्री विनीत जोशी, अध्यक्ष, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड; श्री मैक्स कलैंडेट, निदेशक, फ्रांसीसी सांस्कृतिक दूतावास; श्री फारूख शेख, प्रसिद्ध अभिनेता; डॉ. अख्तर उल वसी, उपाध्यक्ष, उर्दू अकादमी, दिल्ली तथा श्री बाल कृष्णन शुक्ला, सांसद प्रमुख थे ।

निदेशक
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया